कथा सरिता

ये सच है.... या झूठ...

एक बार एक गांव में मंदिर का काम चल रहा था। मंदिर 'आदिवासी' और 'गरीब' लोग बना रहे थे। एक आदिवासी बड़ी मूर्ति बना रहा था!

कुछ दिन बाद मंदिर बनकर तैयार हो गया। मंदिर में पुजारियों द्वारा हवन, मूर्ति स्थापना और मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा आदि कार्य सम्पन्न हो गया।

अगले दिन मन्दिर दर्शन के लिए खोल दिया गया। वह मूर्तिकार जिसने मूर्ति बनाई थी, वो भी दर्शन को आया था। वह ख़ुशी के मारे बिना चप्पल उतारे मन्दिर में प्रवेश कर गया।

पुजारी उसपर क्रोधित हुआ और कहा - 'मूर्ख, तू जाहिल है क्या, चप्पल पहनकर मन्दिर में नहीं आते। जा, चप्पल बाहर उतार के आ!'

आदिवासी बोला-'पुजारी जी, जब मैं चप्पल पहनकर मूर्ति बना रहा था और चप्पलों से उसपर चढ़ जाता था तब किसी ने मना नहीं किया!'

पुजारी बोला - 'बेवकूफ, हमने अपने मन्त्रों से मूर्ति में प्राण डाल दिए हैं, समझा!'

बेचारा आदिवासी चुपचाप अपने घर चला गया। कुछ दिन बाद वह दोबारा मन्दिर गया तो देखा की मन्दिर में ताला लगा था।

उसको किसी ने बताया की पुजारी जी का बेटा खत्म हो गया है। यह सुनकर वह दौड़कर पुजारी के घर गया। वहाँ सब लोग रो रहे थे। वह धीरे से पुजारी के पास जाकर बोला: 'आप रो क्यों रहे हैं, जैसे आपने मूर्ति में अपने मन्त्रों से प्राण डाल दिए, वैसे ही अपने बेटे में प्राण डाल दीजिए।' यह सुनकर सब अचंभे से उसकी तरफ देखने लगे ।

पुजारी बोला -'क्या ऐसा कभी होता है, कोई मरा हुआ दुबारा जीवित होता है।'

आदिवासी बोला: 'तो आपने मन्दिर में जो बात बोली, क्या वो झूठ थी?'

इस प्रश्न का उत्तर आज तक नहीं मिला है।

अंधविश्वास भगाओ, देश बचाओ।

सात दिन ही बचे हैं...

एक बार की बात है, संत तुकाराम अपने आश्रम में बैठे हुए थे। तभी उनका एक शिष्य, जो स्वभाव से थोड़ा क्रोधी था, उनके समक्ष आया और बोला- 'गुरूजी, आप कैसे अपना व्यवहार इतना मधुर बनाये रहते हैं, ना आप किसी पे क्रोध करते हैं और ना ही किसी को कुछ भला-बुरा कहते हैं! कृपया अपने इस अच्छे व्यवहार का रहस्य बताइए।'

संत बोले- 'मुझे अपने रहस्य के बारे में तो नहीं पता, पर मैं तुम्हारा रहस्य जानता हूँ !'

'मेरा रहस्य! वह क्या है गुरू जी?' शिष्य ने आश्चर्य से पूछा।

'तुम अगले एक हफ्ते में मरने वाले हो!' संत तुकाराम दु:खी होते हुए बोले।

कोई और कहता तो शिष्य ये बात मज़ाक में टाल सकता था, पर स्वयं संत तुकाराम के मुख से निकली बात को कोई कैसे काट सकता था!

शिष्य उदास हो गया और गुरू का आशीर्वाद ले वहां से चला गया।

उस समय से शिष्य का स्वभाव बिल्कुल बदल सा गया। वह हर किसी से प्रेम से मिलता और कभी किसी पे क्रोध न करता, अपना ज़्यादातर समय ध्यान और पूजा में लगाता। वह उनके पास भी जाता जिससे उसने कभी गलत व्यवहार किया था और उनसे माफ़ी मांगता। देखते-देखते संत की भविष्यवाणी को एक हफ्ते पूरे होने को आये।

शिष्य ने सोचा, चलो एक आखिरी बार गुरू के दर्शन कर आशीर्वाद ले लेते हैं। वह उनके समक्ष पहुंचा और बोला- 'गुरूजी, मेरा समय पूरा होने वाला है, कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिये!'

'मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है पुत्र। अच्छा, ये बताओ कि पिछले सात दिन कैसे बीते? क्या तुम पहले की तरह ही लोगों से नाराज़ हुए, उन्हें अपशब्द कहे?'

संत तुकाराम ने प्रश्न किया।

'नहीं-नहीं, बिल्कुल नहीं। मेरे पास जीने के लिए सिर्फ सात दिन थे, मैं इसे बेकार की बातों में कैसे गंवा सकता था! मैं तो सबसे प्रेम से मिला, और जिन लोगों का कभी दिल दुखाया था उनसे क्षमा भी मांगी।' शिष्य तत्परता से बोला।

'संत तुकाराम मुस्कुराए और बोले - 'बस यही तो मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है। मैं जानता हूँ कि मैं कभी भी मर सकता हूँ, इसलिए मैं हर किसी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करता हूँ।'

शिष्य समझ गया कि संत तुकाराम ने उसे जीवन का यह पाठ पढ़ाने के लिए ही मृत्यु का भय दिखाया था।

वास्तव में हमारे पास भी सात दिन ही बचे हैं :-

रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र और शनि, आठवां दिन तो बना ही नहीं है।

तो आइये, आज से ही परिवर्तन आरम्भ करें।

मैं क्यों पापी...!

एक बार एक ऋषि ने सोचा कि लोग गंगा में पाप धोने जाते हैं, तो इसका मतलब हुआ कि सारे पाप गंगा में समा गए और गंगा भी पापी हो गयी !

उसने यह जानने के लिए तपस्या की, कि पाप कहाँ जाता है ?

तपस्या करने के फलस्वरूप देवता प्रकट हुए, ऋषि ने पूछा: 'भगवन, जो पाप गंगा में धोया जाता है वह पाप कहाँ जाता है?'

भगवान ने कहा: 'चलो गंगा से ही पूछते हैं।' दोनों लोग गंगा के पास गए और कहा: 'हे गंगे! जो लोग तुम्हारे यहाँ पाप धोते हैं, तो इसका मतलब आप भी पापी हुई!'

गंगा ने कहा: 'मैं क्यों पापी हुई, मैं तो सारे पापों को ले जाकर समुद्र को अर्पित कर देती हूँ !'

अब वे लोग समुद्र के पास गए और पूछा: 'हे सागर! गंगा जो पाप आपको अर्पित कर देती है तो इसका मतलब आप भी पापी हुए !'

समुद्र ने कहा: 'मैं क्यों पापी हुआ, मैं तो सारे पापों को लेकर भाप बना कर बादल बना देता हूँ !'

अब वे लोग बादल के पास गए और कहा 'हे बादलों! समुद्र जो पापों को भाप बनाकर बादल बना देते हैं, तो इसका मतलब आप पापी हुए!'

बादलों ने कहा: 'मैं क्यों पापी हुआ, मैं तो सारे पापों को वापस पानी बरसा कर धरती पर भेज देता हूँ, जिससे अन्न उपजता है, जिसको मानव खाता है, उस अन्न में जो अन्न जिस मानसिक स्थिति से उगाया जाता है और जिस वृत्ति से प्राप्त किया जाता है, जिस मानसिक अवस्था में खाया जाता है, उसी अनुसार मानव की मानसिकता बनती है!

शायद इसीलिये कहते हैं....

'जैसा खाए अन्न, वैसा बनता मन।'

इसीलिये सदैव भोजन सिमरन और शांत अवस्था में करना चाहिए और कम से कम अन्न जिस धन से खरीदा जाए वह धन ईमानदारी एवं श्रम का होना चाहिए !

गुवाहाटी-असम। जीएमसीएच ऑडिटोरियम हॉल में ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल। मंचासीन हैं ब्र.कु. जोनाली, ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी,माउण्ट आबू, ब्र.कु. शारदा, असम सरकार के मुख्य सचिव विनोद कुमार पीपरसेनिया एवं असम फाइनेन्शियल कॉर्पोरेशन के चेयरमैन ब्र.कु. विजय गुप्ता।

नई दिल्ली। जुएल ओरम,यूनियन मिनिस्टर,आदिवासी डेवलपमेंट को माउण्ट आबू में होने वाले इंटरनेशनल कॉन्फ्रेन्स का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. इन्दुमती, ब्र.कु. विजय, ब्र.कु. प्रफुल्ला तथा अन्य।

लाखेरी-राज.। शिक्षक दिवस के अवसर पर महाराजा मूलसिंह डिग्री कॉलेज में 'शिक्षा में आध्यात्मिकता' विषयक संगोष्ठी के दौरान मंचासीन हैं मुख्य अतिथि बाबूलाल वर्मा,खाद्य एवं आपूर्ति राज्यमंत्री, विशिष्ठ अतिथि पुलिस उपाधीक्षक नरपत सिंह, थाना प्रभारी श्रीमती कौशल्या, प्रधानाध्यापक सच्चीदानन्द जी तथा बूंदी सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. कमला दीदी।

बीबीगंज-फर्रुखाबाद(उ.प्र.)। शहर में निकाली गई शिव संदेश शोभायात्रा में उपस्थित हैं ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. रीता तथा ब्र.कु. सुरेश चन्द्र गोयल।

आगरा-शास्त्रीपुरम। माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. अनिल का गुलदस्ता भेंट कर सम्मान करते हुए ग्रामीण सम्पादकीय सचिव नरेश कुमार सक्सेना। साथ हैं ब्र.कु. मधु तथा ब्र.कु. शालू।

आगर-उ.प्र.। केन्द्रीय कारागार में सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में जेलर रत्नागिरी जी, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. गीता व अन्य।